## श्री वासुपूज्य जिन पूजन

स्थापना

(गीता छंद)

जय वासुपूज्य जिनेश पद में, वंदना शत बार है।
जिसने लिया है नाम श्रद्धा, से हुआ भव पार है।।
जबसे प्रभु तव दर्श पाया, एक अतिशय हो गया।
कोई नहीं भाता मुझे अब, मन विरागी हो गया।।
भव से बचाकर नाथ अपने, सिद्धमहल बुलाइये।
या भक्त भव्यों के हृदय में, आइये प्रभु आइये।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(गीता छंद)

शुचि पंद्रह का नीर लेकर, आपको अर्पण करूँ।
मिथ्यात्व मल मेरा नशा दो, हे प्रभु अर्चन करूँ।।
श्री वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव ताप को चंदन जिनेश्वर, मेट ना सकता कभी।
प्रभु आ गया हूँ मैं भटक कर, पद शरण देना अभी।।
श्री वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धवल के पुंज पावन, शुभ्र चरणों में धरूँ।
मैं चार विध आराधना से, चार गति के दुःख हरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पुष्प नंदन वन सुगंधित, चरण में अर्पण करूँ।
दुष्काम का संसताप हरने, शीश चरणों में धरूँ।।
श्री वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सरस पावन सौम्य रस युत, चरु चरण युग में धरूँ।
जिनराज भव व्याधि मिटा दो, नमन तव पद में करूँ।।
श्री वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव पद कमल की आरती कर, ज्ञान दीप जला सकूँ।
सब मोह पथ को त्या कर मैं, मोक्ष पथ अपना सकूँ।।
श्री वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध लेकर आ गया हूँ, ध्यान निज का कर सकूँ ।

ये कर्म अष्ट विनष्ट कर मैं, मोक्षगामी हो सकूँ ।।
श्री वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु कर्म फल के राग की रुचि, अब नहीं किञ्चित् करूँ।
यह मोक्षफल परमात्म पदपा, शिवमहल में पग धरूँ।।
श्री वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
हो आप सर्व समर्थ जिनवर, अर्घ्य क्या अर्पण करूँ।
प्रभु आप ही के नंत गुण का, राज दिन सुमिरण करूँ।।
श्री वासुपूज्य शतेन्द्र पूजित, मैं करूँ आराधना।
संसार से घबरा गया हूँ, बन सकूँ परमातमा।।..9।।
ऊँ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

( तर्ज-जय जय आदिनाथ भगवान, इक्षुरस का किया पारणा... छंद )

जय-जय वासुपूज्य भगवान,जय-जय तीर्थंकर भगवान..
महाशुक्र वैभव तज आये, आषाढ़ कृष्ण षष्ठी दिन आये।
माँ विजया के गर्भ में आये, वसूपूज्य पितु हर्ष मनाये।।
वासुपूज्य गर्भोतसव के दिन, देव करें जयगान।
जय-जय वासुपूज्य भगवान,जय-जय तीर्थंकर भगवान ।।।1।।
ऊँ ह्रीं आषाढ़कृष्णषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
फाल्गुन कृष्णा का दिन आया, चौदस वारुण योग बताया।
मेरु पर अभिषेक कराय, इंद्रों ने शुभ अवसर पाया।।
इंद्राणी ने हर्ष हर्षकर, नृत्य किया गुणगान।
जय-जय वासुपूज्य भगवान,जय-जय तीर्थंकर भगवान ।2।।
ऊँ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचर्तुदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी आई, पुष्पाभा पालकी भी आई।
मनुज देव ने उसे उठाई, उद्यान मनोहर तक पहुँचाई।।
जाति स्मरण हुआ प्रभुवर, तीन हुए जिन ध्यान।
जय-जय वासुपूज्य भगवान,जय-जय तीर्थंकर भगवान ।।3।।
ऊँ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माघ शुक्ल की दोज मनोरम, तेंदु तरु तल बाग मनोहर।
केवलज्ञानप्रकाशितजिनवर, जय हो जय जगपूज्य जिनेश्वर।।
समवसरण में राजे स्वामी, दे उपदेश महान।
जय-जय वासुपूज्य भगवान,जय-जय तीर्थंकर भगवान ।।4।।
ऊँ ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
भादों शुक्ल चतुर्दशी आयी, उडु विशाख शिवलक्ष्मी पाई।
छह सौ एक साथ मुनिराई, कर्म नष्ट कर मुक्ति पाई।।
चंपापुर निर्वाण धाम जहाँ, हुए पाँच कल्याण।
जय-जय वासुपूज्य भगवान,जय-जय तीर्थंकर भगवान ।।।5।।
ऊँ ह्रीं भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ऊँ हीं अर्हं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय छंद)

इंद्र नरेंद सुरों से पूजित, वासुपूज्य मेरे भगवान।
विश्व विजेता विश्व विभूति, जिनवर महिमा महा महान।।
महिष चिह्न युत पद कमलों को, जो मनमंदिर में धारे।
पूज्य पदों की परम कृपा से, भक्त स्वयं निज को तारे।।1।।
तीन ज्ञान के धारी स्वामी, जन्म समय से थे गुणवान।
वसुदेव पितु माँ विजया ने दिया सभी को अनुपम दान ।।
प्रभु आपका जन्म जानकर, आनंदित सुर नर सारे।
ऐरावत गज लेकर आये, लाए वाद्य यंत्र सारे।।2।।
त्ीन प्रदक्षिणा दे नगरी की, इंद्राणी जिनगुह आई।
निद्रालीन किया माता को, मन में हर्षित हो आई।।
प्रथम किये जिन शिशु के दर्शन, सूरज जैसा अतिशायी।
सौंप दिया कर में प्रभु जी को, इंद्र अचंभित था भारी।।3।।
सहस्त्र नयन से निरख-निरख कर, मेरु सुदर्शन न्हवन किया।
इंद्राणी ने वस्त्राभूषण, पहनाकर श्रृंगार किया।।
चंपापुर में आकर सबने, मात पिता को नमन किया।
तांडव नृत्य किया अति अद्भुत, जिन बालक को सौप दिया।।4।।
अष्ट वर्ष की आयु में ही, प्रभु ने अणुव्रत धार लिया।
ब्रह्मचर्य आजीवन रखकर, पंच मुष्टि कचलोंच किया।।
दीक्षा लेकर चार ज्ञन युत, मौन रहे एक वर्ष प्रमाण।
क्षपक श्रेणी चढ़ मोह नाश कर, पदपाया अरहंत महान।।।5।।
देश-देश में विहार करके, मुक्ति का उपदेश दिया।
धर्म-शुक्ल शुभ ध्यान के द्वारा, मोक्ष मिले संदेश दिया।।
श्रावक मुनिव्रत को दर्शाया, दीक्षा विधि भी बतला दी।
छ्यासठ गणधर थे जिनवर के, मुख्यार्या वरसेना थी।।6।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष, कल्याण हुए चंपापुर में।
धन्य-धन्य चंपापुर नगरी, धन्य धरा इस भूतल में।।
हे जिनवर में शिवपद पाऊँ, यही भावना है स्वामी।
''पूर्ण'' करो मेरी अभिलाषा, वासुपूज्य त्रिभुवननामी।।7।।

दोहा

प्रभु कृपा से प्राप्त हो, परम आत्म कल्याण।
जयमाला चरणन धरूँ, हे जिन पूज्य महान।।8।।

ऊँ हीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

श्री वासुपूज्य जी, लाया अरजी, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।